सुना है हमने ये वेद पुराणो में प्रभु तो बसते है गुरु के प्राणों में

सुना है हमने ये,
वेद पुराणो में,
प्रभु तो बसते है,
गुरु के प्राणों में,
गुरु कृपा से ही प्रभु मिले है,
सदा रहना दिल में तू गुरुवर के,
सुना हैं हमने ये,
वेद पुराणो में,
प्रभु तो बसते है,
गुरु के प्राणों में।bd।

तर्ज – मिले हो तुम हमको बड़े।

गुरु के मुख से निकलता,
प्रभु नाम है,
सुबह शाम आठो पहर,
यही काम है,
भक्त को भगवान मिले,
यही भावना है,
गुरुदेव को सदा यही चाहना है,
सदा ही रहना तुम,
गुरु के चरणों में,
प्रभु तो बसते है,
गुरु के प्राणों में।bd।

“दिलबर” के दिल में,
गुरु की मूरत है,
बिन गुरु मिलती कहाँ,
जन्नत है,
जिनको गुरु का,
सहारा मिला है,
‘प्राची’ ये खुशियो से,
जीवन खिला है,
गुरु की वाणी हो,
सदा ही कर्णो में,
प्रभु तो बसते है,
गुरु के प्राणों में।bd।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

सुना है हमने ये,
वेद पुराणो में,
प्रभु तो बसते है,
गुरु के प्राणों में,
गुरु कृपा से ही प्रभु मिले है,
सदा रहना दिल में तू गुरुवर के,
सुना हैं हमने ये,
वेद पुराणो में,
प्रभु तो बसते है,
गुरु के प्राणों में।bd।

गायिका – प्राची जैन बॉम्बे।
लेखक – दिलीप सिंह सिसोदिया “दिलबर”
9907023365

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com